ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं का शिक्षकों के प्रत्यक्षण पर पड़ने वाले प्रभाव

Impact of Schemes Run In Primary Schools On Teachers' Supervision

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 26/09/2020, Date of Publication: 27/09/2020

निकेश चन्द
अध्यापक,
बेसिक शिक्षा विभाग,
हिन्दू डिग्री कॉलेज,
मुरादाबाद, भारत

सारांश

वर्तमान अध्ययन में प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं का शिक्षकों के प्रत्यक्षण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया। अध्ययन के लिए 120 शिक्षक शहरी तथा 80 शिक्षक ग्रामीण क्षेत्र से लिए गए। शहरी शिक्षकों में 72 पुरूष एवं 48 महिला शिक्षक तथा इसी प्रकार ग्रामीण शिक्षकों में से 48 पुरूष एवं 30 महिला शिक्षक शामिल थे। प्रदत्त संकलन मूल रूप से सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया। प्राप्तांकों का विश्लेषण χ-square द्वारा करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शहरी महिला शिक्षक प्रशासनिक व्यवस्था से अधिक संतुष्ट पाई गई।

In the present study, the effect of schemes operated in primary schools on teachers' supervision was studied. 120 teachers were drawn from urban and 80 teachers from rural areas for the study. Among the urban teachers, 72 male and 48 female teachers and similarly among rural teachers 48 male and 30 female teachers were included. The compilation provided was originally done by the survey method. After analyzing the scores by 4.Entham, it was concluded that the urban female teachers were found to be more satisfied with the administrative system.

मुख्य शब्द : Primary School, Perception.

प्रस्तावना

वर्तमान अध्ययन में शिक्षकों के शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) आयाम पर प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति विचारों के प्रभावों के अध्ययन का प्रयास किया गया है। प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनिकरण के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सरकार द्वारा प्राथमिक विद्यालयों में अनेकों कार्यक्रमों तथा योजनाओं का संचालन किया जाता है। आज कल समाज अत्यधिक जटिल होता जा रहा है। समाज भौतिक प्रगति की ओर बढ़ता जा रहा है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति अधिक से अधिक धन कमाने के प्रयत्न में लगा है।

इस प्रकार उसका सामाजिक सन्तुलन बिगड़ा रहता है। भारत की जनसंख्या भी तेजी से बढ़ती रही है और विज्ञान भी निरन्तर प्रगति कर रहा है। भारतवासियों के रहन–सहन का स्तर ऊँचा होता जा रहा है। समाज की समस्याऐं निरन्तर बढ़ती जा रही है। अतः प्राथमिक शिक्षा द्वारा बालकों के विकास, उसकी भावी जीवन की उन्नति तथा समृद्धि, संवैधानिक लक्ष्यों की पूर्ति, औपचारिक शिक्षा स्तर के उन्नयन, शिक्षा स्तर में गिरावट तथा छात्रों में उनके प्रति उदासीनता के समाधान तथा जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न कठिनाईयों के निवारण हेतु सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा के उन्नयन के लिए विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों जैसे– अनौपचारिक शिक्षा परियोजना, ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड परियोजना, सेवारत् अध्यापकों का विस्तृत अभिविन्यास कार्यक्रम, प्राथमिक शिक्षकों का विशेष अनुस्थापन कार्यक्रम, बेसिक शिक्षा परियोजना, जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (द्वितीय एवं तृतीय), जनशाला कार्यक्रम, विद्यालय शिक्षा की तैयारी, स्कूल रेडिनेस कार्यक्रम, प्री–विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम, सम्पूर्ण साक्षरता अभियान, सर्व शिक्षा अभियान, नेशनल प्रोग्राम ऑफ एजूकेशन फॉर गर्ल एलीमेन्ट्री लेवल, स्कूल चलो अभियान, कस्तूरबा गाँधी विद्यालय योजना, ई0सी0 सी0ई0 कार्यक्रम, राष्ट्रीय बाल श्रम परियोजना, मध्यान्ह भोजन/पोषाहार वितरण, छात्रवृत्ति वितरण एवं अन्य प्रोत्साहन योजनाऐं निःशुल्क पाठ्य–पुस्तक, गणवेश, बालकों हेतु फर्नीचर, मीना मंच तथा रेडियो कार्यक्रम आदि को चलाया गया है।

इन सभी योजनाओं एवं कार्यक्रमों से छात्रों की उपलब्धि, शिक्षकों की रूचि तथा अभिभावकों को कार्यक्रम के माध्यम से बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु चलाई गई इन योजनाओं एवं कार्यक्रमों के प्रभाव को जानने के लिए अनुसंधानकर्त्ता ने शिक्षकों एवं छात्रों को विभाजित कर अलग–अलग प्रभाव को जाना है।

इस संदर्भ में कुछ भारतीय एवं पूर्ववर्ती अध्ययनों का उल्लेख अपेक्षित है। मिश्रा (1989) ने उड़ीसा में प्राथमिक स्तर पर अध्यापक शिक्षक कार्यक्रम के विकास का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षक की अभिवृत्ति और प्रत्यक्षण पर विद्यालय में संचालित पाठ्यक्रमों एवं योजनाओं का सार्थक प्रभाव होता है। कमोवेश इसी प्रकार के परिणाम गुप्ता एवं श्रीवास्तव (1989), भार्गव (1990) तथा पेक्कियम (1990) आदि ने भी प्राप्त किया है।

उपर्युक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन में यह परिकल्पना की गई कि शिक्षकों के प्रत्यक्षण पर आयाम प्रशासनिक व्यवस्था का सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

स्कूल में संचालित योजनाओं का शिक्षकों के प्रत्यक्षीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि

वर्तमान अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में कुल 200 शिक्षकों का चयन किया गया, जिनमें से 120 शिक्षक शहरी क्षेत्र तथा 80 शिक्षक ग्रामीण क्षेत्र से लिए गए। शहरी शिक्षकों में से 72 पुरूष एवं 48 महिला शिक्षक शामिल थे। इसी प्रकार 80 शिक्षकों में से 48 पुरूष एवं 30 महिला शिक्षक शामिल थे। प्रदत्त संकलन के लिए स्वनिर्मित शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) मापनी का प्रयोग किया गया। प्रदत्त संकलन के लिए मूल रूप से सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

परिणाम एवं विश्लेषण

प्राप्त परिणामों को विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए सारणी संख्या–1 में प्रस्तुत किया गया है–

सारणी–1

विभिन्न शिक्षकों के समूह के शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) के अन्तर्गत आयाम प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति विचारों की प्रभावशीलता की व्याख्या

क्र.सं.	समूह	संख्या	आवृत्तियाँ	प्रभावशीलता			df स्वातंत्र्य के अंश	x^2 का मान	सार्थक ता स्तर
				सहमत	तटस्थ	असहमत			
1.	शहरी शिक्षक	120	62	18	40	+	2	15.70	*
2.	ग्रामीण शिक्षक	80	38	16	26	+	2	9.12	**
3.	शहरी पुरूष शिक्षक	72	38	10	24	+	2	16.34	*
4.	शहरीमहिला शिक्षक	48	24	08	16	+	2	8.00	**
5.	ग्रामीण पुरूष शिक्षक	48	22	10	16	–	2	4.50	***
6.	ग्रामीण महिला शिक्षक	32	16	06	10	–	2	4.77	***
7.	कुल पुरूष शिक्षक	120	60	20	40	+	2	20.00	*
8.	कुल महिला शिक्षक	80	40	14	26	+	2	12.73	*

* 0.01 पर सार्थक, ** 0.05 पर सार्थक, *** सार्थक नहीं

व्याख्या

सारणी संख्या–1 के अनुसार विभिन्न शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) के अन्तर्गत आयाम प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति विचारों की प्रभावशीलता से प्राप्त आवृत्तियों में 120 शहरी शिक्षकों एवं 80 ग्रामीण शिक्षकों में आयाम के प्रति क्रमशः 62, 38 सहमत, 18, 16 तटस्थ तथ 40, 26 असहमत आवृत्तियाँ प्राप्त हुई जबकि आयाम से प्राप्त आवृत्तियों के आधार पर χ वर्ग का मान क्रमशः 15.70 व 9.12 प्राप्त हुआ। प्राप्त मान स्वातंत्र्य संख्या के 0.01 के 0.05 से प्राप्त मान क्रमशः 9.210 एवं 5.991 के मानों से शहरी शिक्षकों का χ वर्ग 0.01 के मान में से अधिक सार्थक है जबकि ग्रामीण शिक्षकों से प्राप्त χ वर्ग का मान अर्थात् शहरी शिक्षकों एवं ग्रामीण शिक्षकों का आयाम के प्रति दृष्टिकोण सार्थक है। सहमति के आधार प्राप्त कर वर्ग मान 0.01 के मान से कम तथा 0.05 के मान पर सार्थकता व्यक्त करते हैं।

इसी प्रकार विभिन्न शिक्षक समूहों के लिंग के आधार पर शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) के अन्तर्गत आयाम के प्रति विचारों की प्रभावशीलता से प्राप्त आवृत्तियों में 72 शहरी पुरूष एवं 48 शहरी महिला शिक्षकों में आयाम के प्रति क्रमशः 38, 24 सहमत, 10, 18 तटस्थ तथा 24, 16 असहमति आवृत्तियाँ प्राप्त हुई जबकि आयाम से प्राप्त आवृत्तियों के आधार पर χ वर्ग का मान क्रमशः 16.34 एवं 8.00 प्राप्त हुआ। प्राप्त मान स्वातंत्र्य संख्या के 0.01 एवं 0.05 के मान क्रमशः 9.210 एवं 5.991 के मानों से शहरी पुरूष शिक्षकों का आयाम के प्रति सकारात्मक सार्थकता पाई गई अर्थात् प्राप्त χ वर्ग का 0.01 के मान से अधिक है जबकि शहरी महिला शिक्षकों का आयाम के प्रति 0.05 के मान पर सकारात्मक प्रभावशीलता पाई गई अर्थात्

शहरी महिला शिक्षक प्रशासनिक व्यवस्था से सन्तुष्ट पायी गयी।

ग्रामीण क्षेत्र के विभिन्न समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) के आयाम प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति विचारों की प्रभावशीलता से प्राप्त आवृत्तियों में 48 ग्रामीण पुरूष शिक्षकों एवं 32 ग्रामीण महिला शिक्षकों में आयाम के प्रति क्रमशः 22, 16 सहमत, 10, 06 तटस्थ तथा 16, 10 असहमत आवृत्तियाँ व्यक्त की गई जबकि आयाम से प्राप्त आवृत्तियों के आधार पर χ वर्ग का मान क्रमशः 4.50 एवं 4.77 प्राप्त हुआ। प्राप्त मान स्वतंत्राश संख्या के 0.01 एवं 0.05 के मान क्रमशः 9.210 एवं 5.991 के मानों से कम है। अर्थात् ग्रामीण पुरूष शिक्षक एवं ग्रामीण महिला शिक्षक आयाम के प्रति सकारात्मक प्रभावशीलता प्रदर्शित नहीं करते अर्थात् आयाम के प्रति ग्रामीण पुरूष व महिला शिक्षकों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं पाया गया। प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनिकरण कार्यक्रम के प्रति प्रशासनिक व्यवस्था शिक्षकों के अनुकूल नहीं पाई गई।

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनिकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत आयाम के प्रति कुल पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) के अन्तर्गत आयाम प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति विचारों की प्रभावशीलता से प्राप्त आवृत्तियों में 120 कुल पुरूष शिक्षकों एवं 80 कुल महिला शिक्षकों में आयाम के प्रति क्रमशः 60, 40 सहमत, 20, 14 तटस्थ तथा 40, 26 असहमत आवृत्तियाँ प्राप्त हुई। आयाम से प्राप्त आवृत्तियों के आधार पर χ वर्ग का मान क्रमशः 20.00 एवं 12.73 प्राप्त हुआ। प्राप्त मान स्वातंत्र्य संख्या के 0.01 व 0.05 के मान क्रमशः 9.210 व 5.991 स्तर मान से प्राप्त मान अत्यधिक पाया गया अर्थात् सार्थकता पाई गई। इसका अर्थ यह है कि प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनिकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशासनिक व्यवस्था से कुल पुरूष एवं महिला शिक्षक के विचार सकारात्मक प्रभावशीलता प्रकट करते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गए –

1. शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही प्रकार के शिक्षकों का दृष्टिकोण प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति विचारों से समान एवं सार्थक रूप से प्रभावित होता है।
2. शहरी महिला शिक्षक प्रशासनिक व्यवस्था से अधिक संतुष्ट पाई गई।
3. ग्रामीण पुरूष एवं महिला शिक्षक आयाम के प्रति सकारात्मक प्रभावशीलता प्रदर्शित नहीं करते।
4. प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनिकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशासनिक व्यवस्था से सभी पुरूष एवं महिला शिक्षक के विचार सकारात्मक प्रभावशीलता प्रकट करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गुप्ता, जे0के0 एवं श्रीवास्तव ए0बी0एल0 1989 : ''शैक्षिक पिछड़ेपन राज्यों में प्राथमिक स्तर पर अपव्यय व अवरोधन का अध्ययन,'' एन.सी.ई.आर.टी.।*
2. *मिश्रा, ए0 1989 : ''उड़ीसा में प्राथमिक स्तर पर अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के विकास का अध्ययन,'' शोध प्रबन्ध शिक्षा शास्त्र, उत्कल विश्वविद्यालय, उड़ीसा।*
3. *भार्गव, एस0एम0 1990 : ''भारत में प्राथमिक स्तर पर नामांकन एवं शैक्षिक सुविधाओं की वृद्धि पर एक अध्ययन,'' शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, महाराजा शिवाजी राव विश्वविद्यालय, बड़ौदा।*
4. *पेक्कियम, एम0 1990 : ''सकोट्टाई पंचायत संघ में ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना के अन्तर्गत सामग्री का एक अध्ययन'' एम0फिल्0, शिक्षाशास*